B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (B)/Unit – 2(d)
Topic – इतिहास–पाठ्यक्रम में तथ्यों का संगठन
(Organisation of Facts in History-Curriculum)
Lecture No. - 47

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

इतिहास के पाठ्यक्रम में तथ्यों के संगठन के लिए निम्न विधियों का अनुसरण किया जाता है -

1. **एक-समान केन्द्रीय विधि (Concentric Method) - पेस्टालॉजी (Pestalozzi)** ने इस विधि का विकास भिखारियों को उद्यमी बनाने के लिए केया था। उनकी धारणा थी कि इतिहास के माध्यम से समाज की पुनः रचना की जा सकती है। राम-राज्य का नारा भी इसी आधार पर लिया जाता रहा है। पाठ्यक्रम की रूपरेखा इस विधि में प्रत्येक स्तर पर समान रहती है परन्तु स्तर के अनुकूल यह संक्षिप्त या व्यापक होता है।

   इस विधि में निम्न दोष पाये जाते हैं -

   (a)इस विधि में तथ्यों की पुनरावृत्ति होती है। एक ही तथ्य का अध्ययन प्रत्येक स्तर पर किया जाता है।

   (b) इसमें सरल से कठिन, स्थूल से सूक्ष्म जैसे सूत्रों का अभाव है।

   (c)इस विधि में तीन-चार वर्ष में ही पाँच हजार साल का इतिहास पढ़ाया जाता है।

   (d) इस विधि से बालक को इतिहास का पूर्ण ज्ञान नहीं होता है।

प्रो. घाटे (Prof. Ghate) के अनुसार इस विधि के दोषों को प्रारंभिक कक्षाओं में ऐतिहासिक चरित्रों तथा उच्च कक्षाओं में आलोचनात्मक अध्ययन से दूर किया जा सकता है।

2. **काल-क्रम विधि (Cronological Method)** - यह विधि **रूसो (Rousseau)** के प्रकृति के अनुसार शिक्षा के सिद्धांत पर आधारित है। **रूसो** के शब्दों में, "हर एक प्रकार के शिक्षण के लिए एक विशिष्ट समय होता है। हमें इसका विधिवत पालन करना चाहिए।" **पेस्टालॉजी (Pestalozzi)** के अनुसार, "प्रत्येक बालक को उसी प्रकार पढ़ाया जाना चाहिए जैसी उसकी प्रकृति की मांग हो।" इस दृष्टि से प्रत्येक स्तर पर एक इतिहास का काल पढ़ाया जाना चाहिए। जैसे -

(a)प्राचीन काल – कक्षा 6
(b) राजपूत तथा सल्तनत काल – कक्षा 7
(c)मुगल काल – कक्षा 8
(d) ब्रिटिश काल – कक्षा 9
(e)आधुनिक काल – कक्षा 10

काल-खण्ड का चयन करते समय नीचे लिखी बातों का ध्यान अवश्य करना चाहिए -

A)प्रत्येक काल की प्रमुख विशेषताएँ पाठ्यक्रम में आनी चाहिए।

B)प्रत्येक काल की केन्द्रीय समस्या स्पष्ट होनी चाहिए, जैसे - मराठा युग की केन्द्रीय समस्या सवराज प्राप्ति थी ।

C)प्रत्येक काल महापुरूषों की क्रियाओं से युक्त होनी चाहिए।

इस विधि के निम्नलिखित दोष हैं -

i. इस विधि में शिक्षण-सूत्रों का ध्यान नहीं रखा जाता है।

ii. काल की घटनाओं के विस्मरण की संभावनाएँ रहती हैं।

iii.काल का विभाजन सांस्कृतिक युग सिद्धांत के आधार पर होता है।

To be continued to next lecture.....